रचनावाद

*सौरभ कुमार**

एन.सी.एफ़ – 2005 का जब से प्रादुर्भाव हुआ,
नव-आशा और ऊर्जा का तब से ही संचार हुआ,
चहुँओर ज्ञान गंगा बहती, विज्ञान-गणित की विह्वल-सी
डुबकी लेकर हर अनुगामी,
धन-धन होकर इससे निकला।
पाठ्यक्रम अभी तक जटिल रहा, बोझिल बन सबको सता रहा,
कैसे पहुँचा बच्चों तक
यही पहुँच से दूर रहा
लेकिन 'रचनावाद' का प्रयास
इसका निदान बतलाता है
गतिविधियाँ और स्वयं करना
समाधान दिखलाता है,
अभिवृत्ति बनेगी वैज्ञानिक,
खोजी प्रवृत्ति बन जाएगी
हर चीज़ लगेगी सरल-सुलभ
तार्किकता आ जाएगी
हर छात्र करेगा स्वयं प्रयास
स्वयं करके सीखेगा
हल होगा हर समस्या का
हमको भी हर्ष बहुत होगा।

* क्षे. शि. सं., भोपाल

Cover 2&3.indd 3 5/12/2017 4:07:14 PM